

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 3

भागवत सभी प्रश्नों का उत्तर है

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: श्री उद्धव ने कहा :
तत्पश्चात् भगवान् कृष्ण श्री बलदेव के
साथ मथुरा नगरी आये और अपने
माता पिता को प्रसन्न करने के लिए
जनता के शत्रुओं के अगुवा कंस को
उसके सिंहासन से खींच कर अत्यन्त
बलपूर्वक भूमि पर घसीटते हुए मार
डाला।

श्लोक 2: भगवान् ने अपने
शिक्षक सान्दीपनि मुनि से केवल एक

बार सुनकर सारे वेदों को उनकी विभिन्न शाखाओं समेत सीखा और गुरुदक्षिणा के रूप में अपने शिक्षक के मृत पुत्र को यमलोक से वापस लाकर दे दिया।

श्लोक 3: राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य तथा सम्पत्ति से आकृष्ट होकर अनेक बड़े-बड़े राजकुमार तथा राजा उससे ब्याह करने के लिए एकत्र हुए। किन्तु भगवान् कृष्ण अन्य आशावान् अभ्यर्थियों को पछाड़ते हुए उसी तरह

अपना भाग जान कर उसे उठा ले गये
जिस तरह गरुड़ अमृत ले गया था।

श्लोक 4: बिना नथ वाले सात
बैलों का दमन करके भगवान् ने
स्वयंवर की खुली स्पर्धा में
राजकुमारी नाग्नजिती का हाथ प्राप्त
किया। यद्यपि भगवान् विजयी हुए,
किन्तु उनके प्रत्याशियों ने राजकुमारी
का हाथ चाहा, अतः युद्ध हुआ। अतः
शस्त्रों से अच्छी तरह लैस, भगवान् ने
उन सबों को मार डाला या घायल
कर दिया, परन्तु स्वयं उन्हें कोई चोट
नहीं आई।

श्लोक 5: अपनी प्रिय पत्नी को प्रसन्न करने के लिए भगवान् स्वर्ग से पारिजात वृक्ष ले आये जिस तरह कि एक सामान्य पति करता है। किन्तु स्वर्ग के राजा इन्द्र ने अपनी पत्नियों के उकसाने पर (क्योंकि वह स्त्रीवश्य था) लडने के लिए दलबल सहित भगवान् का पीछा किया।

श्लोक 6: धरित्री अर्थात् पृथ्वी के पुत्र नरकासुर ने सम्पूर्ण आकाश को निगलना चाहा जिसके कारण युद्ध में वह भगवान् द्वारा मार डाला गया। तब उसकी माता ने भगवान् से

प्रार्थना की। इससे नरकासुर के पुत्र को राज्य लौटा दिया गया और भगवान् उस असुर के घर में प्रविष्ट हुए।

श्लोक 7: उस असुर के घर में नरकासुर द्वारा हरण की गई सारी राजकुमारियाँ दुखियारों के मित्र भगवान् को देखते ही चौकन्नी हो उठीं। उन्होंने अतीव उत्सुकता, हर्ष तथा लज्जा से भगवान की ओर देखा और अपने को उनकी पत्नियों के रूप में अर्पित कर दिया।

श्लोक 8: वे सभी राजकुमारियाँ
अलग-अलग भवनों में रखी गई थीं
और भगवान् ने एकसाथ प्रत्येक
राजकुमारी के लिए उपयुक्त युग्म के
रूप में विभिन्न शारीरिक अंश धारण
कर लिये। उन्होंने अपनी अन्तरंगा
शक्ति द्वारा विधिवत् उनके साथ
पाणिग्रहण कर लिया।

श्लोक 9: अपने दिव्य स्वरूपों
के अनुसार ही अपना विस्तार करने
के लिए भगवान् ने उनमें से हर एक से
ठीक अपने ही गुणों वाली दस-दस
सन्तानें उत्पन्न कीं।

श्लोक 10: कालयवन, मगध के राजा तथा शाल्व ने मथुरा नगरी पर आक्रमण किया, किन्तु जब नगरी उनके सैनिकों से घिर गई तो भगवान् ने अपने जनों की शक्ति प्रदर्शित करने के उद्देश्य से उन सबों को स्वयम् नहीं मारा।

श्लोक 11: शम्बर, द्विविद, बाण, मुर, बल्वल जैसे राजाओं तथा दन्तवक्र इत्यादि बहुत से असुरों में से कुछ को उन्होंने स्वयं मारा और कुछ को अन्यों (यथा बलदेव इत्यादि) द्वारा मरवाया।

श्लोक 12: तत्पश्चात्, हे विदुर,
भगवान् ने शत्रुओं को तथा लड़ रहे
तुम्हारे भतीजों के पक्ष के समस्त
राजाओं को कुरुक्षेत्र के युद्ध में मरवा
डाला। वे सारे राजा इतने विराट तथा
बलवान थे कि जब वे युद्धभूमि में
विचरण करते तो पृथ्वी हिलती प्रतीत
होती।

श्लोक 13: कर्ण, दुःशासन तथा
सौबल की कुमंत्रणा के कपट-योग के
कारण दुर्योधन अपनी सम्पत्ति तथा
आयु से विहीन हो गया। यद्यपि वह
शक्तिशाली था, किन्तु जब वह अपने

अनुयायियों समेत भूमि पर लेटा हुआ था उसकी जाँघें टूटी थीं। भगवान् इस दृश्य को देखकर प्रसन्न नहीं थे।

श्लोक 14: [कुरुक्षेत्र युद्ध की समाप्ति पर भगवान् ने कहा] अब द्रोण, भीष्म, अर्जुन तथा भीम की सहायता से अठारह अक्षौहिणी सेना का पृथ्वी का भारी बोझ कम हुआ है। किन्तु यह क्या है? अब भी मुझी से उत्पन्न यदुवंश की विशाल शक्ति शेष है, जो और भी अधिक असह्य बोझ बन सकती है।

श्लोक 15: जब वे नशे में चूर होकर, मधु-पान के कारण ताँबें जैसी लाल-लाल आँखें किये, परस्पर लड़ेंगे-झगड़ेंगे तभी वे विलुप्त होंगे अन्यथा यह सम्भव नहीं है। मेरे अन्तर्धान होने पर यह घटना घटेगी।

श्लोक 16: इस तरह अपने आप सोचते हुए भगवान् कृष्ण ने पुण्य के मार्ग में प्रशासन का आदर्श प्रदर्शित करने के लिए संसार के परम नियन्ता के पद पर महाराज युधिष्ठिर को स्थापित किया।

श्लोक 17: महान् वीर अभिमन्यु
द्वारा अपनी पत्नी उत्तरा के गर्भ में
स्थापित पूरु के वंशज का भ्रूण द्रोण
के पुत्र के अस्त्र द्वारा भस्म कर दिया
गया था, किन्तु बाद में भगवान् ने
उसकी पुनः रक्षा की।

श्लोक 18: भगवान् ने धर्म के
पुत्र महाराज युधिष्ठिर को तीन
अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करने के लिए
प्रेरित किया और उन्होंने भगवान्
कृष्ण का निरन्तर अनुगमन करते हुए
अपने छोटे भाइयों की सहायता से

पृथ्वी की रक्षा की और उसका भोग किया।

श्लोक 19: उसी के साथ-साथ भगवान् ने समाज के वैदिक रीति-रिवाजों का दृढ़ता से पालन करते हुए द्वारकापुरी में जीवन का भोग किया। वे सांख्य दर्शन प्रणाली के द्वारा प्रतिपादित वैराग्य तथा ज्ञान में स्थित थे।

श्लोक 20: वे वहाँ पर लक्ष्मी देवी के निवास, अपने दिव्य शरीर, में सदा की तरह के अपने सौम्य तथा मधुर मुसकान युक्त मुख, अपने

अमृतमय वचनों तथा अपने निष्कलक चरित्र से युक्त रह रहे थे।

श्लोक 21: भगवान् ने इस लोक में तथा अन्य लोकों में (उच्च लोकों में), विशेष रूप से यदुवंश की संगति में अपनी लीलाओं का आनन्द लिया। रात्रि में विश्राम के समय उन्होंने अपनी पत्नियों के साथ दाम्पत्य प्रेम की मैत्री का आनन्द लिया।

श्लोक 22: इस तरह भगवान् अनेकानेक वर्षों तक गृहस्थ जीवन में लगे रहे, किन्तु अन्त में नश्वर यौन

जीवन से उनकी विरक्ति पूर्णतया प्रकट हुई।

श्लोक 23: प्रत्येक जीव एक अलौकिक शक्ति द्वारा नियंत्रित होता है और इस तरह उसका इन्द्रिय भोग भी उसी अलौकिक शक्ति के नियंत्रण में रहता है। इसलिए कृष्ण के दिव्य इन्द्रिय-कार्यकलापों में वही अपनी श्रद्धा टिका सकता है, जो भक्ति-मय सेवा करके भगवान् का भक्त बन चुका हो।

श्लोक 24: एक बार यदुवंशी तथा भोजवंशी राजकुमारों की

क्रीड़ाओं से महामुनिगण क्रुद्ध हो गये तो उन्होंने भगवान् की इच्छानुसार उन राजकुमारों को शाप दे दिया।

श्लोक 25: कुछेक महीने बीत गये तब कृष्ण द्वारा विमोहित हुए समस्त वृष्णि, भोज तथा अन्धक वंशी, जो कि देवताओं के अवतार थे, प्रभास गये। किन्तु जो भगवान् के नित्य भक्त थे वे द्वारका में ही रहते रहे।

श्लोक 26: वहाँ पहुँचकर उन सबों ने स्नान किया और उस तीर्थ स्थान के जल से पितरों, देवताओं

तथा ऋषियों का तर्पण करके उन्हें तुष्ट किया। उन्होंने राजकीय दान में ब्राह्मणों को गौवें दीं।

श्लोक 27: ब्राह्मणों को दान में न केवल सुपोषित गौवें दी गईं, अपितु उन्हें सोना, चाँदी, बिस्तर, वस्त्र, पशुचर्म के आसन, कम्बल, घोड़े, हाथी, कन्याएँ तथा आजीविका के लिए पर्याप्त भूमि भी दी गई।

श्लोक 28: तत्पश्चात् उन्होंने सर्वप्रथम भगवान् को अर्पित किया गया अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन उन ब्राह्मणों को भेंट किया और तब अपने

सिरों से भूमि का स्पर्श करते हुए उन्हें
सादर नमस्कार किया। वे गौवों तथा
ब्राह्मणों की रक्षा करते हुए भलीभाँति
रहने लगे।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव